आचार्य बुद्धघोस

कृत

परमत्थजोतिका

सुत्तनिपात-अट्ठकथा

भाग - २

हिंदी अनुवाद

अनुवादक

प्रो. अंगराज चौधरी

विपश्यना विशोधन विन्यास

आचार्य बुद्धघोस

कृत

परमत्थजोतिका

सुत्तनिपात-अट्ठकथा

भाग - २

हिंदी अनुवाद

अनुवादक

प्रो. अंगराज चौधरी

विपश्यना विशोधन विन्यास

धम्मगिरि, इगतपुरी

H112 - सुत्तनिपात-अट्ठकथा भाग - 2 (सजिल्द)
H111 - सुत्तनिपात-अट्ठकथा भाग - 2 (अजिल्द)

© विपश्यना विशोधन विन्यास
सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण: सितंबर २०२२

मूल्यः रु. 890.00 **(सजिल्द)**
मूल्यः रु. 590.00 **(अजिल्द)**

ISBN 978-81-7414-459-1 (Hardbound)
ISBN 978-81-7414-457-7 (Paperback)

प्रकाशकः
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२ ४०३
जिला- नाशिक, महाराष्ट्र
फोनः ०२५५३-२४४९९८, २४३५५३, २४४०७६,
२४४०८६, २४४१४४, २४४४४०
Email: vri_admin@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org

मुद्रकः
अपोलो प्रिंटिंग प्रेस
२५९, सीकॉफ लिमिटेड, ६९ एम. आय. डी. सी.,
सातपुर, नाशिक-४२२००७, महाराष्ट्र

सुत्तनिपात अट्ठकथा भाग - २

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय ८

भूमिका ९

२. चूळवर्ग २३

१. रतनसुत्तवर्णना २५

२. आमगन्धसुत्तवर्णना ५३

३. हिरिसुत्तवर्णना ६५

४. मङ्गलसुत्तवर्णना ७०

५. सूचिलोमसुत्तवर्णना ९९

६. कपिलसुत्त-(धम्मचरियसुत्त)-वर्णना १०३

७. ब्राह्मणधम्मिकसुत्तवर्णना ११०

८. धम्मसुत्त-(नावासुत्त)-वर्णना १२४

९. किंसीलसुत्तवर्णना १२९

१०. उट्ठानसुत्तवर्णना १३४

११. राहुलसुत्तवर्णना १३८

१२. निग्रोधकप्पसुत्त-(वङ्गीससुत्त)-वर्णना १४३

१३. सम्मापरिब्बाजनीयसुत्त-(महासमयसुत्त)-वर्णना १५१

१४. धम्मिकसुत्तवर्णना १६४

३. महावर्ग १७७

१. पब्बज्जासुत्तवर्णना १७९

२. पधानसुत्तवर्णना १८६

३. सुभासितसुत्तवर्णना १९६

४. पूरळाससुत्त-(सुन्दरिकभारद्वाजसुत्त)-वर्णना २०१
५. माघसुत्तवर्णना २१५
६. सभियसुत्तवर्णना २२३
७. सेलसुत्तवर्णना २४१
८. सल्लसुत्तवर्णना २५७
९. वासेट्ठसुत्तवर्णना २६४
१०. कोकालिकसुत्तवर्णना २८२
११. नालकसुत्तवर्णना २९२
१२. द्वयतानुपस्सनासुत्तवर्णना ३११
४. अष्टकवर्ग ३२५
१. कामसुत्तवर्णना ३२७
२. गुहट्ठकसुत्तवर्णना ३३१
३. दुट्ठट्ठकसुत्तवर्णना ३३६
४. सुद्धट्ठकसुत्तवर्णना ३४१
५. परमट्ठकसुत्तवर्णना ३४७
६. जरासुत्तवर्णना ३५१
७. तिस्समेत्तेय्यसुत्तवर्णना ३५५
८. पसूरसुत्तवर्णना ३५९
९. मागण्डियसुत्तवर्णना ३६५
१०. पुराभेदसुत्तवर्णना ३७२
११. कलहविवादसुत्तवर्णना ३७७
१२. चूळब्यूहसुत्तवर्णना ३८३
१३. महाब्यूहसुत्तवण्णना ३८९
१४. तुवटकसुत्तवर्णना ३९६

१५. अत्तदण्डसुत्तवर्णना ४०२
१६. सारिपुत्तसुत्तवर्णना ४०८
५. पारायणवर्ग ४१५
वस्तुगाथावर्णना ४१७
१. अजितसुत्तवर्णना ४३२
२. तिस्समेत्तेय्यसुत्तवर्णना ४३५
३. पुण्णकसुत्तवर्णना ४३७
४. मेत्तगूसुत्तवर्णना ४४०
५. धोतकसुत्तवर्णना ४४४
६. उपसीवसुत्तवर्णना ४४७
७. नन्दसुत्तवर्णना ४५१
८. हेमकसुत्तवर्णना ४५४
९. तोदेय्यसुत्तवर्णना ४५६
१०. कप्पसुत्तवर्णना ४५८
११. जतुकण्णिसुत्तवर्णना ४६०
१२. भद्रावुधसुत्तवर्णना ४६२
१३. उदयसुत्तवर्णना ४६४
१४. पोसालसुत्तवर्णना ४६६
१५. मोघराजसुत्तवर्णना ४६८
१६. पिङ्गियसुत्तवर्णना ४७०
पारायणस्तुतिगाथावर्णना ४७२
निगमनकथा ४७९
शब्दानुक्रमणिका ४८१
विपश्यना साधना केंद्र ४९०

समर्पण

विपश्यना आचार्यप्रवर श्री सत्यनारायण गोयन्काजी को सादर समर्पित

जिन्होंने मुझे बुद्ध के व्यावहारिक दर्शन और पालि साहित्य के मर्म को समझने की दृष्टि दी।

– अंगराज चौधरी

प्रकाशकीय

लगभग १६०० वर्ष पूर्व बुद्धघोस द्वारा लिखित सुत्तनिपात अट्ठकथा, जिसे परमत्थजोतिका भी कहते हैं, का आज तक हिंदी में अनुवाद नहीं हुआ है। प्रो० अंगराज चौधरी ने सर्वप्रथम इसका हिंदी में अनुवाद किया है। विपश्यनाचार्य पूज्य गोयन्काजी से जो दृष्टि इन्होंने पायी है उसी के आलोक में यह अनुवाद कार्य संपन्न हुआ है। जगह-जगह पर इस पुस्तक में साधना संबंधी बहुत-सी गंभीर बातें हैं जो आजकल सुबोध नहीं हैं। फिर भी विपश्यना का अभ्यास करनेवाले इसे बहुत दूर तक समझ सकते हैं– इसमें संदेह नहीं है।

पू० गोयन्काजी तीन भिक्षुओं द्वारा किये गये त्रिपिटक के अनुवाद से परिचित थे, इसलिए उनकी बड़ी इच्छा थी कि यदि अट्ठकथाओं का हिंदी में अनुवाद हो जाय तो हिंदी भाषा तो समृद्ध होगी ही, बहुत से पाठक जो पालि नहीं समझते हैं इसे पढ़कर लाभान्वित होंगे।

उन्हें यह भी पता था कि त्रिपिटक का हिंदी अनुवाद भी विपश्यना के दृष्टिकोण से न होने पर शतप्रतिशत ठीक नहीं है। इसे ही देखने के लिए उन्होंने प्रो० अंगराज चौधरी को अंगुत्तर निकाय का भदंत कौसल्यायन द्वारा किये अनुवाद को आधार बनाकर जहां-जहां विपश्यना का उल्लेख आता है, सुधारने को कहा था ।

प्रो० अंगराज चौधरी ने सुत्तनिपात अट्ठकथा भाग-२ का हिंदी अनुवाद आज से लगभग १५ वर्ष पहले कर दिया था। अब उसको इन्होंने पुनः सुधार कर छापने योग्य बनाया है।

विपश्यना विशोधन विन्यास से अट्ठकथा साहित्य की हिंदी में छपनेवाली पुस्तकों में यह द्वितीय पुस्तक है।

विपश्यना विशोधन विन्यास इस द्वितीय पुष्प को पाठकों को समर्पित करता है और मंगल कामना करता है कि उन्हें इसका पूरा लाभ मिले।

विपश्यना विशोधन विन्यास